विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय-हिंदी ***दिनांक-11/07/2020***
वर्ग-पंचम ***विषय-शिक्षिका— नीतू कुमारी***
(N.C.E.R.T. पर आधारित)
पाठ-9 (अहिंसा और प्रेम)

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने चेतक कविता का प्रश्नावली हल किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्ययन-सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ते होंगे। आज की आपको 'अहिंसा और प्रेम' कहानी का अध्ययन करना है। जो कि इस प्रकार है:—

एक बार महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी राजगृह से चलकर श्रावस्ती पहुँचे। श्रावस्ती कोशल की राजधानी थी। वर्तमान अयोध्या के आस-पास का प्रदेश उस समय 'कोशल' कहलाता था। वहाँ का राजा प्रसेनजित महात्मा बुद्ध का शिष्य था।

श्रावस्ती पहुँचने पर महात्मा बुद्ध ने राजा को बड़ा व्याकुल पाया। पूछने पर राजा ने कहा, "भगवन!, अंगुलिमाल डाकू से मेरी प्रजा बड़ी त्रस्त है। इसी से मैं बहुत चिंतित हूँ। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।" महात्मा बुद्ध ने राजा को धीरज बँधाया और कहा, "मैं तुम्हारी चिंता दूर करूँगा।"

अंगुलिमाल बड़ा भयंकर डाकू था। उसके अत्याचार से प्रसेनजित की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। उसने हज़ार आदमियों की हत्या करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। वह जितने आदमियों को मारता था उनकी संख्या याद रखने की एक युक्ति निकाल रखी थी। जब वह किसी वध करता तो उसकी एक अंगुली धागे में पिरो कर अपने गले में डाले रहता था। इस प्रकार, उसके पास अंगुलियों की एक माला-सी बन गई थी, जिसे वह गले में डाले रहता था। इसी कारण उसका नाम 'अंगुलिमाल' पड़ गया था।

बच्चों, आज के लिए इतना ही, शेष अगली कक्षा में।

गृहकार्य :—

बच्चों, अध्ययन-सामग्री को पढ़ें तथा कठिन शब्द चुनकर लिखें।